पच्चुप्पन्नवत्थु

तदा हि सत्था "देवदत्तो वधाय परिसक्कती"ति सुत्वा "न, भिक्खवे, देवदत्तो इदानेव मय्हं वधाय परिसक्कति, पुब्बेपि परिसक्कियेवा"ति वत्वा अतीतं आहरि।

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो कुरुङ्गमिगो हुत्वा अरञ्ञे एकस्स सरस्स अविदूरे एकस्मिं गुम्बे वासं कप्पेसि। तस्सेव सरस्स अविदूरे एकस्मिं रुक्खग्गे सतपत्तो, सरस्मिं पन कच्छपो वासं कप्पेसि। एवं ते तयोपि सहायका अञ्ञमञ्ञं पियसंवासं वसिंसु। अथेको मिगलुद्दको अरञ्ञे चरन्तो पानीयतित्थे बोधिसत्तस्स पदवलञ्जं दिस्वा लोहनिगळसदिसं वट्टमयं पासं ओड्डेत्वा अगमासि। बोधिसत्तो पानीयं पातुं आगतो पठमयामेयेव पासे बज्झित्वा बुद्धरवं रवि। तस्स तेन सद्देन रुक्खग्गतो सतपत्तो उदकतो च कच्छपो आगन्तवा "किं नु खो कातब्ब"न्ति मन्तयिंसु। अथ सतपत्तो कच्छपं आमन्तेत्वा "सम्म, तव दन्ता अत्थि, त्वं इमं पासं छिन्द, अहं गन्त्वा यथा सो नागच्छति, तथा करिस्सामि, एवं अम्हेहि द्वीहिपि कतपरक्कमेन सहायो नो जीवितं लभिस्सती"ति इममत्थं पकासेन्तो पठमं गाथमाह—

"इङ्घ वट्टमयं पासं, छिन्द दन्तेहि कच्छप। अहं तथा करिस्सामि, यथा नेहिति लुद्दको"ति ।।

अथ कच्छपो चम्मवरत्तं खादितुं आरभि, सतपत्तो लुद्दकस्स वसनगामं गतो अविदूरे रुक्खे निसीदि। लुद्दको पच्चूसकालेयेव सत्तिं गहेत्वा निक्खमि। सकुणो तस्स निक्खमनभावं ञत्वा वस्सित्वा पक्खे पप्फोटेत्वा तं पुरिमद्वारेन

क. वर्तमान कथा

उस समय यह सुनकर कि देवदत्त बध के लिए प्रयत्न करता है शास्ता ने कहा, 'भिक्षुओं, न केवल इस समय देवदत्त मेरे बध के लिए प्रयत्नशील है, उसने पहले भी प्रयास किया है।' इतना कहकर पूर्व-जन्म की कथा कही।

ख. अतीत कथा

पूर्व काल में वाराणसी-नृप ब्रह्मदत्त के राज्य करते समय बोधिसत्व कुरुङ्ग-मृग की योनि में पैदा हुए। वह जंगल में एक तालाब के पास झाड़ी में रहते थे। उसी तालाब के समीपस्थ वृक्ष पर एक कठफोड़ा और तालाब में कछुआ रहते थे। वे तीनों परस्पर प्रेम से रहते।

एक शिकारी जंगल में घूमते हुए पानी पीने के स्थान पर बोधिसत्व के पैरों का चिन्ह देख लोहे की जंजीर सदृश फंदे (या जाल) फैलाकर चला गया।

बोधिसत्व पानी पीने आकर (रात्रि के) पहले पहर में ही फँस गये; तो फँस जाने का संकेत (स्वर) किया। उसका संकेत (स्वर) सुन वृक्ष-शाखा पर से कठफोड़ा और पानी से कछुआ आये। उन्होंने सलाह की—क्या किया जाये? कठफोड़े ने कछुए को सम्बोधित कर कहा—मित्र! तेरे दाँत हैं। तुम जाल को काटो। मैं जाकर ऐसा करूँगा जिससे वह आने न पाये। इस प्रकार हम दोनों के प्रयत्न से हमारे मित्र की जान बचेगी। इस बात को स्पष्ट करते हुए यह गाथा कही—

देख कछुए! तुम दाँतों से चमड़े के जाल को काटो। मैं ऐसा यत्न करूँगा जिससे शिकारी आने न पाये।

कछुए ने चमड़े की डोरी काटनी प्रारम्भ की। कठफोड़वा शिकारी के घर गया। शिकारी प्रात:काल ही पाश लेकर निकला। पक्षी ये यह जान कि वह घर से निकल रहा है आवाज कर, परों को फड़फड़ा आगे के द्वार से निकलते हुए उसके

निक्खमन्तं ञत्वा वस्सित्वा पक्खे पप्फोटेत्वा तं पूरिमद्वारेन निक्खमन्तं मुखे पहरि। लुद्दो ‘‘काळकण्णिना सकुणेनम्हि पहटो’’ति निवत्तित्वा थोकं सयित्वा पुन सत्तिं गहेत्वा उट्ठासि। सकुणो ‘‘अयं पठमं पुरिमद्वारेन निक्खन्तो इदानि पच्छिमद्वारेन निक्खमिस्सती’’ति ञत्वा पच्छिमगेहे निसीदि। लुद्दोपि ‘‘पुरिमद्वारेन मे निक्खन्तेन काळकण्णी सकुणो दिट्ठो, इदानि पच्छिमद्वारेन निक्खमिस्सामी’’ति पच्छिमद्वारेन निक्खमि, सकुणो पुन वस्सित्वा गन्त्वा मुखे पहरि। लुद्दो ‘‘पुनपि काळकण्णीसकुणेन पहटो, न दानि मे एस निक्खमितुं देती’’ति निवत्तित्वा याव अरुणुग्गमना सयित्वा अरुणुग्गमनवेलाय सत्तिं गहेत्वा निक्खमि। सकुणो वेगेन गन्त्वा ‘‘लुद्दो आगच्छती’’ति बोधिसत्तस्स कथेसि।

तस्मिं खणे कच्छपेन एकमेव चम्मबद्धं ठपेत्वा सेसवरत्ता खादिता होन्ति। दन्ता पनस्स पतनाकारप्पत्ता जाता, मुखतो लोहितं पग्घरति। बोधिसत्तो लुद्दपुत्तं सत्तिं गहेत्वा असनिवेगेन आगच्छन्तं दिस्वा तं वद्धं छिन्दित्वा वनं पाविसि, सकुणो रुक्खग्गे निसीदि कच्छपो पन दुब्बलत्ता तत्थेव निपज्जि। लुद्दो कच्छपं गहेत्वा पसिब्बके पक्खिपित्वा एकस्मिं खाणुके लग्गेसि। बोधिसत्तो निवत्तित्वा ओलोकेन्तो कच्छपस्स गहितभावं ञत्वा ‘‘सहायस्स जीवितदानं दस्सामी’’ति दुब्बलो विय हुत्वा लुद्दस्स अत्तानं दस्सेसि। सो ‘‘दुब्बलो एस भविस्सति, मारेस्सामि न’’न्ति सत्तिं आदाय अनुबन्धि। बोधिसत्तो नातिदूरे नाच्चासन्ने गच्छन्तो तं आदाय अरञ्ञं पाविसि, दूरं गतभावं ञत्वा पदं वञ्चेत्वा अञ्ञेन मग्गेन वातवेगेन गन्त्वा सिङ्गेन पसिब्बकं उक्खिपित्वा भूमियं पातेत्वा फालेत्वा कच्छपं नीहरि। सतपत्तोपि रुक्खा ओतरि। बोधिसत्तो द्विन्नम्पि ओवादं ददमानो ‘‘अहं तुम्हे निस्साय जीवितं लभिं, तुम्हेहि

मुँह पर प्रहार किया। शिकारी ने सोचा–अशुभ-दर्शन पक्षी ने मुझ पर प्रहार किया।

वह रुक गया, थोड़ी देर लेट, फिर पाश लेकर उठा। ‘पहले यह आगे के द्वार से निकला था। अब पीछे के द्वार से निकलेगा’ सोच (कर) पक्षी घर के पीछे की ओर जाकर बैठा। शिकारी ने भी यह सोचा–आगे के द्वार से निकलते समय मैंने अशुभ-दर्शन पक्षी देखा। अब पिछले द्वार से निकलूँगा। वह पीछे के द्वार से निकला। पक्षी ने फिर जाकर आवाज लगा मुँह पर प्रहार किया। शिकारी ने कहा–फिर मुझ पर अशुभ पक्षी ने प्रहार किया। यह मुझे निकलने नहीं देता। वह रुक गया अरुणोदय तक लेटा रहा; उसके पश्चात् पाश लेकर निकला।

पक्षी ने शीघ्रता से जाकर बोधिसत्व को सूचना दी कि शिकारी आ रहा है।

उस समय तक कछुए ने एक को छोड़ शेष सभी रस्सियाँ काट डाली थीं। उसके दाँत गिरने लायक हो गये थे; मुहँ रक्त से लाल हो चुका था। बोधिसत्व शिकारी को पाश लेकर विद्युतगति से आता देख बन्धन तोड़ वन में जा घुसा। पक्षी वृक्ष-शाखा पर जा बैठा। कछुवा दुर्बलता के कारण वहीं पड़ा रहा। शिकारी ने कछुए को एक थैले में डाल किसी ठूँठ पर रख दिया।

बोधिसत्व ने रुक कर देखा तो मालूम हुआ कि कछुआ पकड़ा गया। उसने सोचा–मित्र के प्राण बचाऊँगा। उसने अपने आपको शिकारी के सामने इस प्रकार दिखाया जैसे बहुत दुर्बल हो गया हो। शिकारी ने सोचा–यह (और) दुर्बल होगा; इसे मारूँगा। उसने शक्ति से बोधिसत्व का पीछा किया। बोधिसत्व न बहुत दूर, न बहुत निकट चलते हुए उसे लेकर जंगल में गये। जब जान लिया कि दूर निकल आये तब मुड़ कर दूसरे मार्ग से वायु-गति में जा, सींग से थैली उठा, जमीन पर

सहायकस्स कत्तब्बं मय्हं कतं, इदानि लुद्दो आगन्त्वा तुम्हे गण्हेय्य, तस्मा, सम्म सतपत्त, त्वं अत्तनो पुत्तके गहेत्वा अञ्ञत्थ याहि, त्वम्पि सम्म कच्छप, उदकं पविसाही''ति आह। ते तथा अकंसु। सत्था अभिसम्बुद्धो हुत्वा दुतियं गाथमाह—

''कच्छपो पाविसी वारिं, कुरुङ्गो पाविसी वनं। सतपत्तो दुमग्गम्हा, दूरे पुत्ते अपानयी''ति।।

तत्थ अपानयीति आनयि, गहेत्वा अगमासीति अत्थो।

लुद्दोपि तं ठानं आगन्त्वा कञ्चि अपस्सित्वा छिन्नपसिब्बकं गहेत्वा दोमनस्सप्पत्तो अत्तनो गेहं अगमासि। ते तयोपि सहाया यावजीवं विस्सासं अच्छिन्दित्वा यथाकम्मं गता।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि—''तदा लुद्दको देवदत्तो अहोसि, सतपत्तो सारिपुत्तो, कच्छपो मोग्गल्लानो, कुरुङ्गमिगो पन अहमेव अहोसि''न्ति।

कुरुङ्गमिगजातकं

●

७. अस्सकजातकं

अयमस्सकराजेनाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो पुराणदुतियिकापलोभनं आरब्भ कथेसि।

पच्चुप्पन्नवत्थु

सो हि भिक्खु सत्थारा ''सच्चं किर, त्वं भिक्खु, उक्कण्ठितोसी''ति पुट्ठो ''सच्चं''न्ति वत्वा ''केन उक्कण्ठापितोसी''ति वुत्ते ''पुराणदुतियिकाया''ति आह। अथ नं सत्था ''न इदानेव तस्सा भिक्खु इत्थिया तयि

गिरा, फाड़ कर कछुए को बाहर निकाला। कठफोड़ा भी वृक्ष पर से नीचे उतरा। बोधिसत्व ने दोनों को उपदेश देते हुए कहा—तुम्हारी सहायता से मेरे प्राण बचे। मैंने भी तुम्हारे प्रति मित्र का कर्तव्य पालन किया। अब कहीं शिकारी आकर तुम्हें पकड़ न ले; इसलिए मित्र कठफोड़, तुम अपने पुत्रों को ले अन्य स्थान पर चले जाओ; और मित्र कछुवे तुम पानी में।

उन्होंने कथनानुसार ही किया। शास्ता ने बुद्ध होने पर दूसरी गाथा कही—

कछुवा पानी में जा घुसा। कुरुङ्ग वन में चला गया। कठफोड़ा वृक्ष-शाखा पर से अपने पुत्रों को दूर ले गया।

अपानयीति—अपनयि अर्थात् लेकर चला गया।

शिकारी वहाँ आ किसी को न देख फटी थैली ले दुःखी मन से अपने घर गया। वे भी तीनों मित्र जीवन पर्यन्त परस्पर विश्स्वस्त रह यथाकर्म परलोक गये।

शास्ता ने यह धर्मदेशना कह, जातक का परिणाम संघटित किया।

उस समय शिकारी देवदत्त था। कठफोड़ा सारिपुत्र, कछुवा मोग्गल्लान। कुरुङ्ग-मृग तो मैं ही था।

कुरुङ्गमिग जातक

●

२०७. अस्सक जातक

''**अयमस्सकराजेनाति**-.....'' यह (गाथा) शास्ता ने जेतवन में विहार करते समय पूर्व भार्या के प्रति आसक्ति को लक्ष्य करके कही।

क. वर्तमान कथा

शास्ता ने उस भिक्षु से पूछा—क्या तुम सचमुच उत्कण्ठित हो? "हाँ, सचमुच।" "किसने उत्कण्ठित किय?" "पूर्व-